सुनील गज्जाणी

बादल

उमड़-घुमड़ कर उमड़-घुमड़ कर
बादल नाचे ज़्यूँ ठुमक कर

गड़गड़ कर यूँ बिजली चमके
बच्चे छुप गए सब दुबक कर

झर-झर कर बरसा पानी फिर
हरियाली फूटी मुस्कुरा कर

नहाई-धोयी- सी हुई धरा,
तलैया बहने लगी इठला कर

पोखर-जोहड़ मानो चौपायों
के बर्तन भर गए डबडबा कर

चले किसान खेतों की ओर,
अपने हल लिए खूब हर्षा कर